

दीर्घनिद्रा स्त्री. (तत्.) 1. लंबी नींद, अधिक देर तक सोना 2. चिरनिद्रा मृत्यु, मौत।

दीर्घ निःश्वास पुं. (तत्.) लंबा श्वास, दुःख और शोक के कारण ली जाने वाली लंबी साँस।

दीर्घबाहु पुं. (तत्.) 1. हरिवंश पुराण में वर्णित शिव के एक अनुचर का नाम 2. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम **वि.** लंबी भुजा वाला।

दीर्घवृत्त पुं. (तत्.) गणि. अंडाकार बड़ा गोला या गोलाकार क्षेत्र जो ऐसी रेखा से घिरा हो जिसका प्रत्येक बिंदु उस क्षेत्र के मध्य बिंदु से समान अंतर पर हो **वि.** पृथ्वी की परिक्रमा दीर्घवृत्ताकार होती है जिसके कारण अधिक मास और क्षयमास निश्चित समय पर होता है, क्षय-मास का पहले और बाद वाला मास अधिक मास होता है।

दीर्घवृत्ताकार वि. (तत्.) दीर्घवृत्त के आकार वाला, अंडाकार।

दीर्घसंधि स्त्री. (तत्.) व्या. दो पदों में प्रथम पद के अंत में तथा द्वितीय पद के प्रारंभ में आने वाले समान स्वर के आपस में मिलने से हुई होने वाली संधि, स्वरसंधि का एक भेद।

दीर्घसूत्रता स्त्री. (तत्.) हर काम को लंबा खींचने या उसमें देरी करने की आदत, देर से काम करने की प्रवृत्ति।

दीर्घसूत्री वि. (तत्.) प्रत्येक काम में बहुत देर करने वाला, काम को पूरा करने में अपेक्षा से अधिक विलंब करने वाला।

दीर्घस्वर पुं. (तत्.) व्या. स्वर का उच्चारण, उसकी दो मात्राओं के बराबर करने पर उच्चरित स्वर। जैसे- आ, ई, ऊ आदि, ह्रस्व स्वर का विलोम।

दीर्घा स्त्री. (तत्.) 1. लंबा, कम चौड़ा, छतदार गलियारा या झ्योढ़ी 2. दर्शकों के लिए ऊँचाई पर बना हुआ स्थान, दर्शक दीर्घा 3. विशाल या लंबा भवन जिसमें पुस्तकों, कलाकृतियों या प्रदर्शनियों का आयोजन होता रहता है।

दीर्घाकार वि. (तत्.) बड़े आकार वाला लंबी या बड़ी आकृति वाला।

दीर्घाक्षर पुं. (तत्.) व्या. 1. बड़े अक्षर, दीर्घ आकार वाला अक्षर 2. अंग्रेजी (रोमन लिपि) के कैपिटल अक्षर।

दीर्घायु वि. (तत्.) दीर्घजीवी, लंबी आयु वाला, चिरजीवी, जिसकी उम्र लंबी हो।

दीर्घायुष्य पुं. (तत्.) लंबी उम्र, बहुत दिनों की आयु।

दीर्घावकाश न्यायाधीश पुं. (तत्.) दीर्घावकाश के दौरान काम करने के लिए नियुक्त न्यायाधीश।

दीर्घिका स्त्री. (तत्.) 1. बावड़ी, बावली या बाउली, (छोटा) जलाशय 2. एक प्रकार की लंबी नाव।

दीर्घीकरण पुं. (तत्.) 1. किसी वस्तु को दीर्घ करना, विस्तार करना 2. व्या. ह्रस्व वर्ण की मात्रा का दीर्घ हो जाना।

दीर्घीकृत वि. (तत्.) जिसे दीर्घ किया गया हो, जिसे बढ़ाया गया हो, विस्तृत।

दीर्घ वि. (तत्.) 1. विदारित, चिरा हुआ, फाड़ा गया जिसमें दरका लग गया हो, भग्न।

दीर्घवृत्तज पुं. (तत्.) दीर्घवृत्त को उसके एक अक्ष के चारों ओर घुमाने से बना पृष्ठ, वह पृष्ठ जिसका समतल परिच्छेद दीर्घवृत्त होता है।

दीर्घावकाश पुं. (तत्.) लंबी छुट्टी, बहुत दिनों का अवकाश, न्यायालयों और विद्यालयों के सत्रों के बीच का अवकाश, जैसे गर्मी के दिनों की छुट्टी।

दीवट पुं. (तद्.) दीया रखने का आधार, पीतल या लकड़ी या लोहे का बना दीपक रखने का लंबा और ऊँचा आधार, चिरागदान, दीयट, दीप स्तंभ।

दीवा पुं. (तद्.) दे. दीप।

दीवान पुं. (अर.) 1. वजीर, मंत्री, राज्य का प्रबंधक 2. गजल संग्रह 3. राज सभा, कचहरी, न्यायालय, राजा के बैठने का स्थान, राज दरबार 4. लकड़ी का बना एक प्रकार का सोफा जिसका उपयोग बैठने के साथ साथ सोने के लिए भी होता है।